भगवान नित्यानन्द के दर्शन एवं उनका प्रज्ञान

१. "जब लोग बाबा मुक्तानन्द के पास आते और कहते, 'मेरे पास इतनी सारी समस्याएँ हैं,' तो बाबा जी हमेशा कहते, 'भगवान नित्यानन्द से प्रार्थना करो। वे उन्हें हर लेंगे।' आज तक, यह बात सच है। उनके अन्दर उस सबका समावेश है जो एक व्यक्ति को चाहिए — परम सत्य। वे पूर्णरूपेण अचल हैं। और यह महान गुरुओं का लक्षण है।"

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२. "भगवान नित्यानन्द कहते थे, 'यह ब्रह्माण्ड अनन्त है और यह तुम्हारी अपनी ही आत्मा है। इस जगत को अन्तरात्मा के रूप में देखो। जगत तुमसे भिन्न नहीं और तुम जगत से भिन्न नहीं हो। तुम्हारे अपने राम तुम्हारे ही अन्दर वास करते हैं।' "

~ स्वामी मुक्तानन्द

३. "बाहर की हर चीज़, अन्तर में सूक्ष्म रूप में पूर्णतया विद्यमान है। 'अपने अन्दर खोज,' ऐसा कहकर गुरुदेव भक्तों को अपने ही अन्तर-लोकों की खोज करने के लिए प्रवृत्त करते थे। और वे खुद भी सतत अन्तर-लीन रहते थे।"

~ स्वामी मुक्तानन्द

४. "जो कुछ है नित्यानन्द है, और कुछ नहीं केवल नित्यानन्द। वे ही हैं ब्रह्मानन्द, वे ही आत्मानन्द, वे ही मुक्ति का आनन्द और वे ही प्रेमानन्द हैं। जो कुछ है प्रेम ही है, और कुछ नहीं बस प्रेम।"

~ स्वामी मुक्तानन्द

५. “जब बाबा जी गुरु के विषय में बात करते तो हमेशा कहते, ‘गुरु वे हैं जो तुम्हारे अज्ञान को हर लेते हैं, जो अन्धकार का विनाश कर तुम्हारे अन्दर प्रकाश को प्रकट करते हैं।’ ”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

६. “वे सर्वात्मा, ‘तत्त्वमसि’ पद के लक्ष्य, मुक्तानन्द के हृदय-विलासी, गणेशपुरीवासी श्री नित्यानन्द सिद्धविद्यार्थियों को परमानन्द-अमृतवर्षा से पूर्ण करके चिरशान्ति और नित्यतृप्ति प्रदान करें।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

७. “जब तुम भगवान नित्यानन्द के मुखमण्डल के दर्शन करते हो तो तुम प्रकाश अपने साथ ले जाते हो। फिर बाबा मुक्तानन्द के सशक्त सन्देश को जीना सम्भव है : ‘परस्पर देवो भव।’ तुम यह अभिज्ञान कर पाते हो कि हर किसी में भगवान का वास है, भगवान हर किसी के मित्र हैं, भगवान सभी के हैं।”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

८. “मन्दस्मित — मृदुल मुस्कान, कोमल मुस्कान, सदय मुस्कान, स्नेही मुस्कान, कल्याणकारी मुस्कान। बाबा मुक्तानन्द अपने गुरु, भगवान नित्यानन्द की मुस्कान का कैसा सुन्दर वर्णन करते हैं : ‘परमानन्द में मग्न, उनके मुख पर तेजोमय, मृदुल और करुणामयी मुस्कान सतत छिटकी रहती थी। समय-समय पर, वे हँसते और उनका वह अट्टहास मेरी स्मृति में अब भी प्रतिध्वनित होता है। मुस्कराना उन्हें प्रिय था। उनकी इसी हास्य-प्रियता के कारण लोगों ने उन्हें ‘नित्यानन्द’ नाम से सम्बोधित करना आरम्भ कर दिया, ‘वे जो सतत आनन्द में रहते हैं’।’ ”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

९. “मेरे गुरुदेव कहा करते थे, ‘भगवान एक हैं और वे प्रेमस्वरूप हैं।’ ”

~ स्वामी मुक्तानन्द

१०. “मैं अपने गुरु, भगवान नित्यानन्द को पूजता हूँ क्योंकि उनकी कृपा से ही मैं जान पाया कि मैं कौन हूँ, उन्हीं की कृपा से मेरी आध्यात्मिक यात्रा पूर्ण हुई, उन्हीं की कृपा से मैं फ़कीर से राजा बन गया। . . . वे मेरे श्वासरूप प्राण हैं, वे मेरा जीवन हैं, वे ही मेरे अन्तरतम सत्य हैं।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

११. “अपने गुरु के विषय में बात करते हुए बाबा जी ने कहा, ‘उनके प्रकाश द्वारा संसार प्रकट होता है। उनके बिना, वह अदृश्य रहता है। सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड उनकी ही आत्मा का तेज है। वे सबके हैं। वे सबकी आत्मा हैं। उनकी कृपा के बिना, कोई सच्ची शान्ति प्राप्त नहीं कर सकता।’ ”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

१२. “भगवान नित्यानन्द एक पूर्ण योगेश्वर थे। सम्पूर्ण विश्व उनसे भिन्न नहीं है, यह ज्ञान होने से वे सतत निजानन्द में मस्त रहा करते थे। वे आत्मा की अद्वैत अवस्था में लीन रहते। सर्वकाल व सर्व परिस्थितियों में वे परमानन्दमय स्थिति में रहते। वे सतत अखिल विश्वब्रह्माण्ड को अपनी ही आनन्दमय व्याप्ति के रूप में देखते।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

१३. “मेरे गुरुदेव परमानन्द में लीन महापुरुष थे। वे जन्मसिद्ध थे। साधारण दिखने पर भी वे सर्वज्ञ थे। वे हमेशा अन्यमनस्क गति से रहते थे। सतत अपने आप में ही पूर्ण मस्त रहते हुए, वे बहुत कम बोलते थे। वे जो भी कहते वही परम सत्य था।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

१४. “तुम जो सुख चाहते हो, वह सब तुम्हारे अन्दर है। वहाँ वह पूर्णरूप में है, पूर्ण प्रकट है।”

~ भगवान नित्यानन्द

१५. “ ‘ॐ नमः शिवाय’ आदि भगवान का, आदि गुरु का नाम है जिनसे अन्य सभी असंख्य गुरु अवतरित हुए हैं। ‘ॐ नमः शिवाय’ वह मन्त्र है जिसने असंख्य सिद्धों को, असंख्य गुरुओं को मोक्ष प्रदान किया है, और यह शक्ति से अनुप्राणित है।”

~ भगवान नित्यानन्द

१६. “दर्शनार्थियों से वे कहते थे, ‘सब में मैं हूँ।’ एक बार एक फ़ोटोग्राफ़र ने गुरुदेव से उनकी फ़ोटो खींचने की आज्ञा माँगी। उन्होंने कहा, ‘तुम विश्व का फ़ोटो लो। क्या ऐसी कोई जगह है जहाँ मैं नहीं हूँ? सभी में मेरी छवि है।’ ”

~ स्वामी मुक्तानन्द

१७. “अपने अन्तर में गहरे जाओ और ध्यान करो; तुम सुखी हो जाओगे।”

~ भगवान नित्यानन्द

१८. “भगवान नित्यानन्द कहते थे, ‘अरे जीवात्मा, तुझे उस अन्तर-सौन्दर्य को देखना चाहिए। वह कितना मधुर, कैसा मोहक, कैसा आनन्दमय है! उस अन्तर-समुद्र का एक बिन्दु भी तुझे बाहर नहीं मिल सकता। इसलिए, अन्तर्मुख हो जा। ध्यान कर, ध्यान कर, ध्यान कर!’ ऐसा उनका सन्देश था।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

१९. "अपने ओजस्वी ग्रन्थ *Secret of the Siddhas* [सीक्रॅट ऑफ़ द सिद्धज़्] में बाबा मुक्तानन्द अपने श्रीगुरु की एकात्म अवस्था का वर्णन करते हैं :

'हे नित्यानन्द, आप नित्य ही आनन्द में निमग्न रहते। आपका नाम ही आनन्द था। आप जब हँसते तो आनन्द और मस्ती आपके रोम-रोम से ऐसे फूट पड़ती मानो आपका आनन्द अचानक ही बड़े वेग से आपकी त्वचा में से बह निकला हो।' "

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२०. "श्रीगुरुदेव को बालकों से अत्यधिक प्रेम था। वे कहा करते थे कि बालकों में राग-द्वेष बहुत कम होता है और वे भगवान के प्रतीक हैं। इसलिए उन्हें बच्चों को मिठाइयाँ, बिस्किट, वस्त्र तथा अन्य उपहार देने में सदैव आनन्द आता था। साधारणतया आसपड़ोस के बच्चे उनके पास ही रहते थे और दिनभर कैलास-निवास में बच्चों के खेलने का हल्ला-गुल्ला मचता रहता था। गुरुदेव उनके लिए विभिन्न प्रकार के अनेक खिलौने रखते थे।"

~ स्वामी मुक्तानन्द

२१. "श्रीगुरुदेव के दर्शनार्थ सहस्त्रों लोग आया करते थे और उनके द्वारा लाए हुए उपहार, गुरुदेव के प्रति उनकी भक्ति तथा भावना को व्यक्त करते थे। शास्त्रों के अनुसार, चार प्रकार की आत्माओं से मिलने के लिए कभी ख़ाली हाथ नहीं जाना चाहिए : देवता, गुरुजन, राजा और बालक।"

~ स्वामी मुक्तानन्द

२२. "श्रीगुरुदेव शक्तिपात द्वारा शिष्य की कुण्डलिनी शक्ति को जाग्रत कर देते थे। यह कुण्डलिनी शक्ति ब्रह्माण्डीय चितिशक्ति ही है। यह, विश्वरूप में दिखाई देने वाली उस दिव्य चिति का ही दूसरा नाम है।"

~ स्वामी मुक्तानन्द

२३. “भगवान नित्यानन्द एक विलक्षण महापुरुष थे। आपका यश गाने में, स्मरण करने में भावुकजनों को शक्तिपात हो जाता था। अब भी आपकी समाधि से, आपके छाया-चित्रों से शक्ति प्राप्त हो जाती है। तत्त्वतः आप इस जगत में अन्दर-बाहर पूर्ण व्यापक हैं क्योंकि ऐसे महापुरुष सर्वात्मा में लीन होते हैं, वे सर्वव्यापी होते हैं।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

२४. “भगवान नित्यानन्द की मूर्ति इतनी सजीव और जाग्रत है कि हर भक्त को लगेगा कि वह वास्तव में भगवान नित्यानन्द के शक्तिपूर्ण सान्निध्य में बैठा है।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

२५. “ध्यान करने का एक सरल तरीक़ा सभी के लिए सुलभ है। मैं भगवान नित्यानन्द की मूर्ति की ओर इशारा करके कह सकता हूँ, ‘मन्दिर में विराजमान बड़े बाबा पर ध्यान करो। अपने चित्त को उनके स्वरूप पर स्थिर करो। अपना हृदय उन्हें समर्पित कर दो।’ ”

~ स्वामी मुक्तानन्द

२६. “यदि तुम गहन भक्तिभाव से इस छवि के दर्शन करोगे, यदि तुम इसके रहस्य के मर्म में डूब जाओगे और इसके नेत्रों में दमकते प्रेम के प्रति, इसके स्वरूप को तेज प्रदान करने वाली दीप्ति के प्रति व इसे चैतन्य बनाने वाले प्रकाश के प्रति संवेदनशील रहोगे तो तुम्हें वास्तव में भगवान नित्यानन्द के सम्पूर्ण वैभव के दर्शन होंगे।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

२७. “मेरे श्रीसद्गुरु, जो परमानन्दमय हैं, जिनका शक्तिपातरूपी प्रसाद समाधि की, शून्यातीत चिदानन्द की अनुभूति कराता है — ऐसे परम कृपालु सद्गुरु का मैं सदा-सदा के लिए ऋणी रहूँगा।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

२८. “दर्शन एक बहुत ही रहस्यमय प्रक्रिया है। यह केवल स्थूल नेत्रों से देखना नहीं है। यह वास्तव में ‘देखना’ बन जाना है जो अन्तर में घटित होता है। यही कारण है कि भारत के सन्तों ने दर्शन को गौरवान्वित किया है। भगवान नित्यानन्द को नमन।”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

२९. “श्री भगवान नित्यानन्द अपनी कृपामात्र से भक्तों को ज्ञान-दृष्टि करा देते थे। प्रपंच में ही ब्रह्म दिखाते थे। नर-नारियों को ‘परस्पर देवो भव’ का मन्त्र पढ़ाते थे।”

~ स्वामी मुक्तानन्द

३०. “अपने मन को स्थिर करने के लिए, ऋषि-मुनियों ने जिस एक अभ्यास का समर्थन किया है वह है, अपने ध्यान को एक ऐसी महान आत्मा पर केन्द्रित करना जो राग और द्वेष से ऊपर उठ चुकी हों। इसीलिए जब तुम भगवान नित्यानन्द के मुखमण्डल का ध्यान करते हो तो तुम्हें तुरन्त महसूस होता है कि तुम अन्दर की ओर खिंचे चले जा रहे हो; तुम आत्मा की अनुभूति करते हो।”

~ गुरुमाई चिद्विलासानन्द

©२०१८ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।